विषय - सूची

आभार ix

प्रस्तावना xiii

कार्ल १

उसका सपना ९

द रेस १६

खामोशी २१

लेखन २७

संदेश ३६

जिमी ४२

पैट्रिक ४७

जागृति ५५

धुंध में प्रकाश की किरण ६०

अनमोल घड़ियां ६९

१९८७ ..... ७६

मेरा परिवार ८२

जाल का विस्तार ९४

निकोल १०२

पीलू ११५

अफ्रीका १२१
स्टेनस्टैड हाल १२६
क्या बाबा ईश्वर हैं? १३५
चितचोर १५२
संदेशवाहक १६०
धूनी १७३
प्यार का सागर १७९
मेहेर बाबा सैन्टर – लन्दन १९०
अन्तर खोज १९५
कुछ उपदेश २०५
मेहेर बाबा की क्रिकेट टीम २१३
बाउन्सर्स २२४
विश्वास २३२
बाबा का उपहार २४२
बाबा का प्रेम २४८
कार्ल २५६

परिशिष्ट

ए. परवरदिगार प्रार्थना २६२
बी. मेहेर बाबा का सार्वभौम संदेश २६५
सी. पूर्ण सदगुरू २६७
डी. कार्ल के सन्देश २७०
ई. मेहेराबाद जानेवाले तीर्थयात्रियों के लिए सूचना २८५
एफ. मेहेर बाबा के बारे में सूचना केन्द्र २८७
जी. शब्द संग्रह २८९
एच. स्रोत सामग्री २९३
आई. पठनीय पुस्तकें २९५

आभार

मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैंने यह पुस्तक लिखी है। मुझे सच में नहीं पता कि अपने साथ घटित होनेवाली बातों को मैं क्यों लिखती रही? मैं अब महसूस करती हूं कि किसी बाहरी शक्ति ने मुझसे यह सब सिलसिलेवार ढंग से लिखवाया। मैंने स्वयं से कहा, "यह तो तुम कर ही रही थी!" जैसे-जैसे दिन बीते एक उत्साहवर्धक मार्ग खुलता हुआ दिखाई दिया। विचारों और शब्दों नें अध्यायों का रूप लिया और अचानक एक सम्पूर्ण पुस्तक की रचना हो गई। मेरे पास अज्ञात कारणों से आनेवाले लोगों की सुन्दर कहानियों और मेरे स्वयं के साथ हुई विचित्र घटनाओं के मेल से यह संभव हो पाया। वे लोग अभी भी मेरे अच्छे मित्र हैं।

मैं पुस्तक लिखने का काम हाथ में नहीं लेती यदि कहीं से प्रोत्साहन और सहायता न मिली होती। ऐमी रबाडी ने यह काम किया। वह किसी निश्चित प्रयोजन को पूरा करने के लिए मेरे जीवन में आई होगी। मैं तहे दिल से उसे सहायता, मार्गदर्शन और सहारे के लिए धन्यवाद देती हूं। मेरे लिए यह अनमोल था। वह पीछे रहकर अथक परिश्रम करती रही और मुझे अध्यायों में त्रुटियां दूर करने, उचित शब्दों और वाक्यों की खोज में सहायता करती रही। हम दोनों ने एक टीम की तरह काम किया। कई बार उसकी भावनाओं से प्रभावित होकर मैंने पुनर्विचार किया और लेखन को सही रूप दिया। हर दूसरे सप्ताह हम मिलकर लिखने के लिए बैठक करते। मैं उसे पूरे सप्ताह में लिखे हुए विचार पढ़ कर सुनाती। बहुत से अवसरों पर वह कृत्रिम निराशा से सिर हिलाती परन्तु हम चर्चा करते, प्रश्न पूछते, बार-बार लिखते, मज़ाक करते, रात्रि का भोजन करते और मैं फिर से लिखने लगती।

निजी व्यक्ति होने के कारण मैं अपने अनुभवों को अपने परिवार और अन्तरंग मित्रों के छोटे से दायरे में सीमित रखना पसन्द करती परन्तु ऐसा न हो सका। इतना कुछ घटित हुआ है और मैं जानती हूं कि अभी बहुत कुछ होना बाकी है क्योंकि जीवन इसी का नाम है। दुख और उदासी सभी के जीवन में आती हैं और विचित्र परिस्थितियां अजीब घटनाएं पैदा करती हैं। जिन लोगों ने गत पन्द्रह वर्षों में मेरे साथ अनुभव तो बांटे हैं परन्तु उनके नामों का उल्लेख इस पुस्तक में नहीं किया गया है, मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूं। मैं उनसे कहना चाहती हूं कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति ने मेरे आध्यात्मिक जागरण में योगदान किया है और इसी कारण पुस्तक की रचना में मदद की है। कुछ लोगों ने शब्दों और मुस्कान से, कुछ ने अपने विश्वास की शक्ति से और कुछ ने विश्वास पर प्रश्नचिन्ह लगाने से, मदद की है। कुछ लोगों की निजता को ध्यान में रखकर नाम बदल दिए गए हैं और कई लोगों ने अपने नाम लिखने की अनुमति भी दी है। इन दोनो वर्गों को मैं हार्दिक धन्यवाद देती हूं।

मैं अपने अनेक मित्रों की ऋणी हूं। उनमें से कुछ नामों की चर्चा करती हूं। मैं श्रीमती भावनगरी और उसके अशरीरी बेटों विस्पी और रातू का विशेष रूप से धन्यवाद करती हूं क्योंकि उन्होंने मेरे लिए एक नई दुनिया के द्वार खोल दिए। श्रीमती ऋषि ने इस द्वार को और अधिक खोल दिया और वह मेरे अपने को जो उस द्वार के पीछे छिपा था, खोजने का ज़रिया बनी। श्री पीलू कापड़िया जिसने अज्ञात लोक की खूबसूरती का वर्णन किया और आइ वी नारथेज जिसने अन्ततः मुझे सम्पूर्ण जानकारी दी, मेरे सम्मान के पात्र हैं।

मैं जार्ज चैपमैन का खास शुक्रिया करना चाहती हूं जिसकी हीलिंग शक्तियां बहुत से लोगों की मदद करती हैं। मैं राय स्टैमन का नाम अवश्य लेना चाहूंगी जिसने प्रारम्भिक अवस्थाओं में मुझे सहारा दिया और पाण्डुलिपि के प्रकाशन के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि उस समय मैं अनिश्चय की स्थिति में थी।

मेरे जीवन में एक ऐसा नाज़ुक दौर आया जब मुझे सहायता और सहारे की बहुत ज़रूरत थी। ऐसे समय में फ्रेनी पैड्डर और ऐमी मेरे साथ

आ जुड़ी। फ्रेनी ने धीरज से सब सुना और उसके हल्के-फुल्के तरीके ने पीछे के कठिन अध्यायों को आसान बना दिया। फ्रेनी ने अपनी योग्यता से पुस्तक को आकार दिया और पृष्ठों को व्यवस्थित किया। मैं केवल उसे प्रयत्नों के लिए ही नहीं बल्कि विश्वास और प्रेम के लिए भी धन्यवाद देना चाहती हूं।

कमल मुल्ला, श्याला बोगा और चन्द्रलेखा मोइत्रा को सम्पादकीय सलाह और प्रबुद्ध वर्ग से सम्पर्क के लिए, रबिन्द्रा हज़ारी को कानूनी सलाह के लिए और सरोश दस्तूर को कम्प्यूटर पर पेश आनेवाली अड़चनों को धैर्य से निपटाने के लिए विशेष धन्यवाद देती हूं। सरोश हमें उस समय मिला जब हमें उसकी बहुत ज़रूरत थी। स्रोत सामग्री में उल्लिखित सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं को मैं धन्यवाद देना चाहती हूं जिन्होंने विभिन्न स्रोतों से वाक्यों, सूचनाओं को मुद्रित करने के लिए अनुमति दी।

मैं अवतार मेहेर बाबा ट्रस्ट, बाल नाटू, भाऊ कलचुरी को सूचनाएं, मदद और प्रोत्साहन देने के लिए हार्दिक धन्यवाद देती हूं। श्री वार्ड पार्कस् का भी जिसने सारी सूचनाएं एकत्रित की और आवश्यक अनुमति दिलाने में मदद की।

मैं हिला तलवार और कोतवाल परिवार की बहुत ऋणी हूं जिनका बाबा के प्रति प्रेम मेरे रास्ते का दीपक बन गया।

मैं अपने मित्रों फिरोज़ और फिरोज़ मेहता का धन्यवाद करती हूं। उन्होने मेरे अनुभवों की सत्यता पर कोई शंका नहीं की और मुझपर भरोसा किया।

मैं अपने पति का विशेष रूप से धन्यवाद करती हूं जिसकी पक्ष और विपक्ष सम्बन्धी सशक्त दलीलों ने मुझे सोचने के लिए बाध्य किया और भावुकता में बह जाने से रोका। कई बार उसकी आलोचना के कारण मुझे उत्तर पाने के लिए गहन विचार करना पड़ा।

मैं अपने प्रिय परिवार का स्मरण करती हूं जिन्होंने मेरे साथ खुशियों भरा वक्त बिताया और कठिन समय में साथ निभाया।

कुछ समय पहले, मेहेराबाद की एक यात्रा के दौरान मैं प्रिय बाबा को श्रद्धा-सुमन चढ़ाने गई तो वहां मुझे श्री तिलक राज चुघ नामक सज्जन मिले। उन्होंने 'साउन्डस आफ साईलैंस' का हिन्दी अनुवाद करने की इच्छा प्रकट की। उनका कहना था कि बाबा का प्रेम-सन्देश उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो अंग्रेजी नहीं पढ़ सकते। मैं मेहेराबाद से लौटकर घर पहुंची ही थी कि मेरी पुस्तकों के प्रकाशक का फ़ोन आया। उन्होंने बताया कि उन्हें सशक्त अनुभूति हो रही है कि 'साउन्डस आफ साईलैंस' का हिन्दी अनुवाद होना चाहिए और मैं इस पर गौर करुं। पिछले अनुभवों से अब हम जान चुके थे कि बाबा अपना काम करवाने के लिए इसी प्रकार प्रेरित करते हैं। हमने बाबा की इच्छा के आगे शीश झुकाया और इस रचना ने रूप ले लिया।

श्री तिलक राज को इस उत्कृष्ट अनुवाद के लिए मेरा हार्दिक धन्यवाद। डॉ. मेहेर ज्योति कुलश्रेष्ठ को प्रूफरीडिंग और उपयोगी सुझाव देने के लिए विशेष धन्यवाद।

– नैन उमरिगर

प्रस्तावना

युवा कार्ल उमरिगर की एकमात्र दीवानगी थी – घोड़े और घुड़दौड़। अठारह वर्ष की आयु में उसके बचपन की कल्पना सच हो गई और वह शोहरत के शिखर पर जा पहुंचा। दुनिया उसके कदमों में थी क्योंकि उसने सत्र की हर बड़ी दौड़ जीत ली थी परन्तु एक त्रासदी हो गई। घुड़दौड़ के पथ पर हुई दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई।

यह कहानी उसके प्रसिद्ध होने या दुखद अन्त की नहीं है बल्कि इस दुर्घटना के छह वर्ष बाद होने वाली घटनाओं का सच्चा विवरण है। इस कहानी में कार्ल द्वारा अपनी मां को शोकपूर्ण स्थिति से निकालकर प्रसन्न करने के दृढ़ निश्चय का वर्णन है।

मैं ही उसकी मां हूं।

उसके निधन के बाद के कुछ वर्ष बहुत दुखद रहे परन्तु वर्ष १९८४ में कुछ ऐसा हुआ जिसने मेरा जीवन हमेशा के लिए बदल दिया। एक दिन मैंने रहस्यवाद और आटोराईटिंग के अज्ञात संसार की ओर कदम बढ़ाए। खामोशी में से आवाज़ें छन-छन कर आने लगीं और मैं एक ऐसी ऊर्जा से संवाद करने लगी जिसे मैंने बेटे की ऊर्जा माना। मैं बहुत ख़ुश हुई परन्तु इस असाधारण घटना पर प्रश्न चिन्ह भी लगाए। क्या यह मेरी ख़ुशफहमी, कल्पना या दिवास्वप्न था? क्या उच्च ऊर्जा, उच्च चेतना, देवदूत, गाईड, संरक्षक या ईश्वर की वास्तविकता है?

कार्ल ने मुझे एक ऐसे स्थान की यात्रा करने की प्रेरणा दी जो मेरी सोच से एकदम उलट था। यह स्थान था मेहेर बाबा की समाधि जो इस युग के

अवतार माने जाते हैं। किसी आध्यात्मिक गुरू में मेरी कोई रूचि नहीं थी परन्तु जिस दृढ़ तरीके से मेरे अशरीरी बेटे ने वह राह दिखाई, उसमें मुझे कुछ साजिश लगी। इसे समझने के लिए मैंने देश-विदेश के माध्यमों से सम्पर्क किया परन्तु किसी के पास उत्तर नहीं थे।

कोरल पालज़ ने कहा, "अध्यात्म के क्षेत्र में तुम्हारे जैसा अनुभव मैंने कभी नहीं सुना।" इस बारे में जानकारी लेने बहुत से लोग मेरे पास आए। मुझे कार्ल और मेहेर बाबा के सम्बन्ध और फिर मेरे और मेहेर बाबा के सम्बन्ध के बारे में उत्तर देना पड़ता था और मुझे अपनी कहानी बार-बार दोहरानी पड़ती थी।

ऐमी रबाडी ने जो सबसे पहले मेरे पास आई, कार्ल के सन्देश पर आस्था रखी। उसने मेहेर बाबा पर गहन अध्ययन किया, अपनी अन्तःप्रेरणा को भी मज़बूत किया और मुझे सहारा देने और प्रोत्साहित करने ऐसे समय आई जब मैं असुरक्षित महसूस करते हुए भी अपने अनुभव बाहरी दुनिया को बताना चाहती थी। उसने निस्वार्थ होकर स्वयं को इस पुस्तक के लेखन, प्रकाशन और वितरण में लगा दिया। "इस पुस्तक का बहुत से लोगों पर गहरा असर पड़ेगा," उसने कहा, "इसके अलावा यह दिल की किताब है क्योंकि दिल ही मेहेर बाबा का स्थान है जिनका प्रेम हम सब पर है। हमारे बच्चे हमारे दिल में रहते हैं और मेहेर बाबा भी, यह विश्वास ही मेरे लिए बहुत है।" मैं यहां स्वीकार करती हूं कि मेरे ध्यान का केन्द्र केवल कार्ल और उसकी कहानियां थी परन्तु यह ऐमी ही थी जो पुस्तक पूर्ण करने तक कड़ी मेहनत करती रही। मैंने न केवल माना कि मेहेर बाबा के प्रति मेरा प्रेम अटूट है बल्कि वो मेरे लिए ईश्वर थे और हैं।

दिसम्बर १९९६ में 'साउन्डस आफ साईलैंस' प्रकाशित हुई और इसकी कई प्रतियां विश्व तक पहुंची। परिवार और मित्रों के आश्वासन के बावजूद मैं इसकी स्वीकृति को लेकर अधीर थी। क्या कोई सुनेगा? क्या कोई विश्वास करेगा? परन्तु मुझे इतनी अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए थी। पुस्तक जीवित हो गई क्योंकि इसने बहुत से दिलों को छुआ। यह पुस्तक केवल इसलिए ही नहीं लोगों को पसन्द आ रही थी कि इसमें एक युवा की सच्ची कहानी है जो भारत में प्रसिद्ध था बल्कि इस लिए भी कि इसमें

मां-बेटे के प्रेम की अमर कहानी भी है। यह कहानी नई तथा अलग हटकर है। हज़ारों लोगों ने पुस्तक पढ़ी और यह संख्या बढ़ती जा रही है। स्थानीय समाचार पत्रों, अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में समीक्षाएं और लेख छपे। रोटरी क्लब और लेडीज़ क्लब ने इस पर चर्चा करने के लिए सभाएं की। क्या यह वास्तव में सम्भव है? क्या यह सच हो सकता है? धीरे-धीरे परन्तु निश्चित रूप से सामाजिक स्थानों से निकलकर यह रूचि घरों तक पहुंचने लगी जहां लोग इन अविश्वसनीय घटनाओं पर चर्चा करने लगे, परलोक से कार्ल द्वारा मिले सुन्दर संदेशों की बात करने लगे और कार्ल के स्वामी मेहेर बाबा द्वारा कुछ लोगों को दी गई सहायता पर चकित होने लगे। अधिकतर लोगों में मेहेर बाबा के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न हुई।

यह जादू चल गया। लोगों की रूचि बहुत अधिक है, प्रतिक्रिया तुरन्त और हृदय को छू लेनेवाली है। जिन्होंने यह पुस्तक पढ़ी है उनमें से कई लोगों की टिप्पणियां हैं – **"**मैं अब मृत्यु से नहीं डरता,**"** या **"**मैं इसे अपने बिस्तर के पास रखता हूं और मैं स्वयं को सुरक्षित और वांछित महसूस करता हूं,**"** या **"**जब भी मैं मुसीबत में होता हूं तो इसे खोल कर कोई पृष्ठ पढ़ लेता हूं तो मुझे समस्या का उत्तर मिल जाता है।**"** कार्ल ने अपने अकाट्य तरीके से लोगों को प्रोत्साहित किया है कि वे अवतार से अपना अपना सम्बन्ध जोड़ें और जीवन को नये अन्दाज़ से देखें। बाबा की मदद से बहुत से टूटे दिल जुड़े हैं। जो शोकमग्न थे उन्हें पता चला है कि उनके प्रिय हमेशा के लिए समाप्त नहीं हुए हैं। बिगड़े रिश्ते फिर से सुधर गए हैं और नये बन गए हैं। इस पुस्तक ने दिखाया है कि कैसे पीड़ा और दुख से मुक्ति पाएं और भीतरी शान्ति प्राप्त करे। कई जीवन सुधर गए हैं।

'साउन्डस आफ साइलैंस**'** को प्रकाशित हुए नौ वर्ष बीत गए हैं फिर भी इस पुस्तक के प्रति उत्साह बढ़ता जा रहा है। प्रार्थना है कि इसकी पहुंच और अधिक बढ़े और उस संसार तक पहुंचे जो शान्ति, प्रसन्नता और कालातीत प्रेम की खोज में है। संसार इस नई चेतना के प्रति जागरूक हो, यही मेरी कामना है।

– नैन उमरिगर
जनवरी २००६

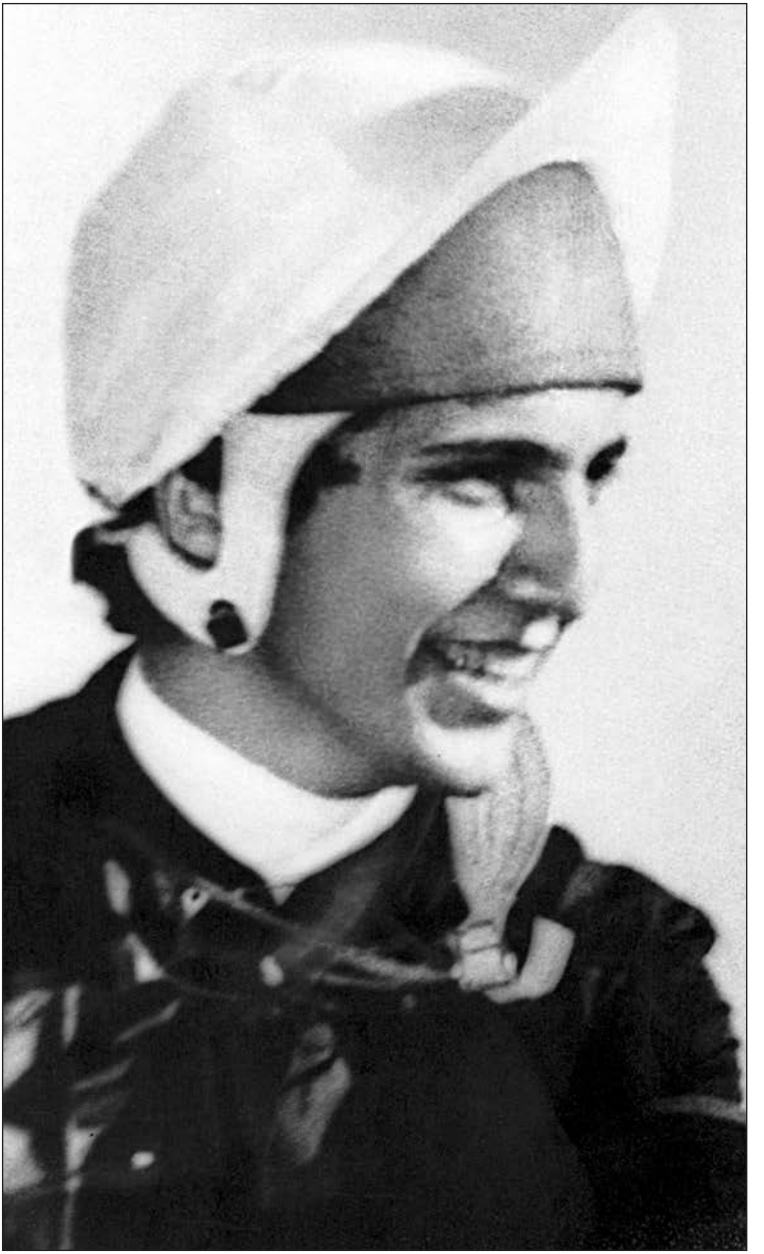

कार्ल

अध्याय १

कार्ल

"मम्मी उठो, सुबह हो गई है।" कार्ल की इस हल्की सी पुकार पर मैंने उत्साहपूर्वक आँखें खोली। मैंने कहा, "हां बेटे, मैं जाग गई हूं।" इससे पहले कि मैं बिस्तर से नीचे फर्श पर पैर रखती, वह तेज़ी से कमरे से बाहर निकल गया।

मैं मुंह धोकर तौलिये से पोंछ ही रही थी कि मुझे रसोईघर में कपों के खड़खड़ाने की आवाज सुनाई दी। मैंने एक झलक में देखा कि कार्ल चाय पीते-पीते तैयार भी हो रहा है। वह अपनी ड्रेस, स्वेटर आदि पहन रहा था तथा जूतों के फीते भी बांध रहा था। कुछ क्षण बाद वह टोपी तथा चाबुक हाथों में लिये मेरे पास आकर बोला, "मम्मी जल्दी करो, मुझे काम पर जाने में देरी हो रही है" उसकी यह जल्दबाजी देखकर मैंने झट से अपने बैग में दूरबीन, पैन, कापी आदि वस्तुएं डाली तथा उसके पीछे-पीछे दौड़ पड़ी।

जब हमारी कार रेसकोर्स पहुंची तब तक अंधेरा ही था। सुबह का यह सुहाना समय मुझे हमेशा भाता था। ओस से भीगी कोमल घास पर चहलकदमी करते हुए मैं इस खूबसूरत सुबह का आनन्द लेने लगी। पक्षियों के चहचहाने के मधुर स्वर तथा गीली धरती पर पेड़ों से गिरनेवाले लाल बादामों की 'धप' जैसी आवाज़ ने सुबह की इस वेला को खुशनुमा बना दिया था। घोड़ों को कसरत कराने के लिये तैयार किया जा रहा था। उनकी लगामें कसी जा रही थी और उनके हिनहिनाने की आवाजें सुनाई दे रही थी। सुबह के इस धुंधलके में कुछ दूरी पर कई अस्पष्ट आकृतियां रास्तों से गुज़र रही थी। जब मैं स्टैन्ड पर अपने स्थान पर बैठने लगी तब सूरज अन्धेरा चीरकर सुनहरी छटा बिखरने लगा था। दूरबीन लगाकर मैंने देखा

कि कार्ल मैदान पर शाही अन्दाज़ से घूम रहा था। अपनी सीट पर बैठते हुए मुझे ख्याल आया कि न जाने यह दिन कौन सी सौगात लेकर आयेगा।

१५ अप्रैल १९७९ का यह दिन मुम्बई घुड़दौड़ के उस सत्र का आखिरी दिन था।

इस सत्र में कार्ल ने ५४ से अधिक जीतें हासिल करके पुराना रिकार्ड तोड़ डाला था। इस दिन कार्ल अगर कुछ दौड़ें और जीत ले तो वह अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी से बहुत आगे हो जायेगा। कार्ल का निकटतम प्रतिद्वन्द्वी कार्ल से केवल चार दौड़ों से पीछे था। ऐसा होने पर कार्ल को चैम्पियनशिप ट्राफी मिल जाती तथा कार्ल का सपना सच हो जाता।

मेरी कल्पना में यह दृश्य आया कि हम विदेश जाने की तैयारी कर रहे हैं जहाँ कार्ल का मुकाबला बहुत ही कुशल घुड़सवारों से होने जा रहा है। दूसरे ही पल मन यथार्थ में लौट आया। देखते हैं कि भविष्य क्या रंग दिखायेगा?

उसी समय मुझे कार्ल के जन्म के समय का दृश्य याद आया। यह ४ अक्तुबर १९६० की बात है। कार्ल सात मास की अपरिपक्व गर्भावस्था के पश्चात पैदा हुआ था। इसी कारण से उसका वज़न केवल चार पौंड तथा चार औंस था। उसका शरीर बेहद कमज़ोर था। डॉक्टर ने हमें चेतावनी दी थी कि हमें किसी भी अनहोनी के लिये स्वयं को तैयार रखना होगा। इस निराशापूर्ण समाचार के कारण मैं इस शिशु की दीर्घायु की प्रार्थना होठों पर लिये चुपचाप रोती रहती थी।

पहली बार जब मैंने कार्ल के सिकुड़े हुए छोटे से चेहरे तथा कमज़ोर शरीर को देखा तो मेरा दिल करूणा से पसीज उठा। मैंने अधीर होकर उसे गले से लगाना चाहा परन्तु ऐसा न कर पाई क्योंकि डाक्टरों ने उसके शरीर पर जगह जगह नलियां लगाई हुई थी।

जैसे-तैसे दिन बीतने लगे। मैं हर बार उसके पास बैठते हुए आशाभरी नज़रो से प्रार्थना करती रहती थी। मुझे आशा थी कि मेरी इस प्रार्थना का कार्ल पर असर दिखाई देगा तथा हम लम्बे समय तक खुशी भरा जीवन साथ-साथ जियेंगे। विचारों की कड़ी जब-तब टूटने लगती क्योंकि नर्स थोड़े-थोड़े समय के बाद उसे खून की बोतल चढ़ा जाती थी। मेरी चिन्ता का कोई अन्त न था। नलियों के माध्यम से ही उसके नाजुक अंगों तक दूध तथा पानी की कुछ

बूंदे ही पहुंच पाती थी। वह कुछ भी नहीं पचा पा रहा था। यह सोच-सोच कर मैं बहुत निराश होने लगती थी कि मेरा बेटा कैसे जी पायेगा?

हर शाम कार्ल का शरीर नीला पड़ने लगता। डाक्टर तथा परिवार जन उसके आस पास मंडराते रहते थे तथा खतरा देखते ही आक्सीजन सिलैन्डर लाने के लिये भागते। किसी न किसी तरह संकट का वह दिन टल जाता। एक दिन और कार्ल के नाम हो जाता।

कार्ल में ऐसी दृढ़ तथा रहस्यमयी जीवनी शक्ति थी जो आगे आनेवाले वर्षों में बेहद उपयोगी साबित हुई।

कार्ल एक वीर तथा उत्साही बच्चे के रूप में बड़ा होने लगा। हालांकि वह देखने में छोटा सा तथा कमज़ोर दिखाई देता था परन्तु उसके अन्दर जीतने की इच्छा कूट-कूट कर भरी हुई थी। वह अपने बड़े भाई नेविल्ल के साथ होड़ लगाने में पूरी शक्ति लगा देता था। नेविल्ल एक शानदार एथलीट के रूप में विकसित हो रहा था। उसने भिन्न-भिन्न खेलों में कुशलता हासिल कर ली और उसे बहुत से सम्मान भी प्राप्त हुए। उसे स्कूल के फ्लैगमार्च में झण्डा लेकर नेतृत्व करने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ।

नन्हें कार्ल को अपने बड़े भाई की इस योग्यता तथा शक्ति से मुकाबला करने के लिये बहुत अधिक प्रयत्न करना पड़ता था। कभी-कभी लाचारी तथा गुस्से में वह हाथापाई पर उतर आता था। कई बार कार्ल अपने छोटे-छोटे परन्तु मज़बूत हाथों से गुस्से में भरकर नेविल्ल पर आक्रमण कर बैठता। ऐसा करते हुए वह एक बिगड़े हुए सांड की तरह दिखाई देता जो कि सिर नीचा किये तेज़ी से झपटता है। जो कोई भी ऐसे दृश्य को देखकर हंसता, उसे कार्ल के क्रोध का शिकार होना पड़ता।

दोनों भाईयों में इस प्रकार की स्पर्धा के बावजूद एक विशेष आत्मीय सम्बन्ध भी था। नेविल्ल जहां एक संरक्षक एवं बचावपक्षवाली भूमिका निभाता था वहां कार्ल एक हमलावर तथा लड़ाकू के रूप में होता था। मैं यह अच्छी तरह जानती थी कि कार्ल दृढ़-निश्चयी तथा ज़िद्दी होने के साथ-साथ परिवार के प्रति कोमल स्वभाववाला भी है। बिना कहे वह अपने दादा-दादी की छोटे-छोटे कामों में सहायता करता था तथा उन्हें आराम पहुंचाने की पूरी कोशिश करता था। छोटे बच्चों की संगति में उसे बहुत मज़ा आता था।

कभी-कभी तो वह किसी छोटे बच्चे को गोदी में बिठाकर घंटो उससे खेलता रहता। छोटे बच्चों से ऐसे लगाव का लाभ उसकी छोटी बहन टीना को मिला। जब कभी मैं उसकी शरारतों से परेशान होकर गुस्सा करने का मन बनाती और उसे सज़ा देना चाहती तो वह आकर मुझ से लिपट जाता और उसके चेहरे पर भोली मुस्कान आ जाती। ऐसे में मेरा गुस्सा कहां टिकता?

जब वह बहुत छोटा था तो उसे मेरी गोद में बहुत सुकून मिलता। बड़ा होने पर भी उसकी यह आदत नहीं छूटी और जब भी उसे अवसर मिलता तब वह मेरी गोद में सिर रखकर सो जाता था।

इन सब बातों के बावजूद कार्ल के विशेष प्रेम तथा भावुक आकर्षण का केन्द्र घोड़े ही थे।

उसकी प्राइमरी शिक्षा के वर्षों में ही हमें पता चल गया था कि वह अक्षर केवल इसलिये सीखना चाहता था ताकि वह अपने पसंद के घोड़ों और उनके सवारों को नाम तथा पहचान दे सके। कार्ल को अक्षर सिखाने का केवल यही तरीका था। उसके नायक घोड़ों को ट्रेनिंग देनेवाले तथा जॉकी होते थे और उसके खेल भी घुड़दौड़ से सम्बन्धित रोमांच वाले होते थे।

क्योंकि मुझे स्वयं घोड़ों से बहुत लगाव था इसलिये मेरा ज्यादा समय उन्हें चारा खिलाने, पानी पिलाने और उन्हें फिट बनाने में बीतता था। कार्ल को मेरे पीछे घोड़े की पीठ पर बैठकर अस्तबलों के इर्द-गिर्द घूमने में बहुत मज़ा आता था। यहां तक कि दो साल की छोटी सी आयु में वह अकेला घोड़े पर सवारी कर सकता था।

छुट्टियों में हम नियमित रूप से प्रसिद्ध पर्वतीय स्थान माथेरान जाया करते थे। मुझे माथेरान की एक धुंधभरी सुबह का वह दृश्य याद है जब दो साल का कार्ल एक राजकुमार की तरह घोड़े की शानदार सवारी करता हुआ वहां के बाज़ारों से गुज़र रहा था। इतने छोटे बच्चे का ऐसा आत्मविश्वास देखनेवालों को चकित कर रहा था। वे ऐसा नज़ारा देखकर खुशी से ताली बजाने लगे। कार्ल इस प्रशंसा से बेखबर अपनी धुन में मग्न होकर घुड़सवारी का आनन्द ले रहा था। अब मुझे पूरा विश्वास हो गया था कि घुड़सवारी के प्रति कार्ल का ऐसा प्रेम अनोखा तथा अनमोल है। मुझे लगा कि कार्ल की यह जादूगरी लोगों के दिलों में छा जायेगी।

क्रिसमस के त्यौहार पर अधिकतर बच्चे अपने माता-पिता से खिलौनों की मांग करते हैं परन्तु कार्ल ऐसा नहीं करता था। उसे ऐसे अवसरों पर सिक्कों से भरे बैग की ज़रूरत होती थी।वह इन सारे सिक्कों को घर के पास स्थित बैंडस्टैन्ड पर घोड़ों की सवारी करने में खर्च कर डालता था। जब सारे सिक्के ख़त्म हो जाते तो वह हमसे और सिक्के मांगता। कार्ल उन सब सईसों का चहेता बन गया था जो किराया लेकर घोड़ों की सवारी कराते थे। वे कहते थे, "यह बच्चा जॉकी बनने वाला है।" ऐसा लगता था कि वे कार्ल के भविष्य को हमसे बेहतर जानते थे।

कार्ल सात वर्ष की आयु में ही घुड़सवारी में निपुण हो गया था। वह इस छोटी उम्र में बिना आसन के घुड़सवारी कर सकता था। कार्ल के इन प्रयासों तथा सफलताओं से ख़ुश होकर हमने उसे छोटे कद का एक घोड़ा उपहार स्वरूप दिया। उस घोड़े को हमने 'फ्यूरी' नाम दिया क्योंकि कार्ल का स्वभाव भी ऐसा था।

फ्यूरी पर सवार कार्ल

परन्तु कार्ल का असली सपना केवल घोड़ों की सवारी करना नहीं था बल्कि घुड़दौड़ में भाग लेना था।

कार्ल को घोड़ों के प्रति इतना जुनूनी लगाव था कि वह तकियों को ही घोड़े मानकर उनपर ज़ीन कस देता था तथा चाबुकों से इतना पीटता था कि तकियों की रुई पूरे कमरे में इधर-उधर बिखर जाती। ऐसा करते हुए वह घोड़ों को आदेश भी देता था तथा बातें भी करता था। इस प्रकार उसने कई काल्पनिक दौड़ें जीतीं।

मुझे ऐसे एक अवसर की याद है। मैं अपने पति के साथ सिनेमा देखने के लिए जाने वाली थी। मैंने देखा कि कार्ल अपने कमरे में काल्पनिक घोड़ों से खेल रहा था तथा उन्हीं में मस्त था। तीन घंटे बाद जब हम घर लौटे तो उसे वैसे ही खेलते पाया। उसका पूरा शरीर पसीने से भरा हुआ था। वह ऊंची आवाज़ में ऐसे बोल रहा था, "यह कर्णसिंह है जो सोमवारियो घोड़े का जॉकी है। ओह! अब 'स्टार्म' आगे हो गया है।" कार्ल की आवाज़ में उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। अब कार्ल थक कर चूर हो गया था और तकिये पर निढाल होकर गिर गया। उसने पूरी बाहें फैला रखी थी। हम ऐसा दृश्य देखकर हैरान थे। कार्ल को पता ही नहीं चला कि हम कब घर से बाहर गये और कब लौटे। ऐसी थी घोड़ों के प्रति उसकी दीवानगी।

ऐसे में आप अनुमान लगा सकते हैं कि वह कैसे पढ़ाई करता होगा वह अपनी ही दुनिया में खोया रहता। वह स्कूल का होमवर्क भी नहीं करता था। इस विषय पर शिक्षकों से उसे बार-बार कड़ी चेतावनी मिलती थी परन्तु उसके पास बहानों की कोई कमी न थी। जब अध्यापक उसे होमवर्क न करके आने के लिए डांटते तो वह मासूम बन कर उत्तर देता, "सुनिये सर! जब मैं पुस्तक लेकर रेसकोर्स के मैदान पर गया ताकि अपना पाठ याद कर सकूं परन्तु क्या हुआ कि मेरी पुस्तक एक घोड़ा ही खा गया।" इतिहास और भूगोल के विषय उसे दुखी करते थे जबकि घुड़दौड़ से सम्बन्धित विषय जैसे जीत, हार, लक्ष्य आदि के बारे में बात हो तो उसकी आंखों में एक चमक आ जाती थी। लगता है अपने पिता जिमी के घुड़सवारी करते हुए चित्रों को देख-देख कर उसके मन में घुड़सवारी के प्रति ऐसी चाह पैदा हुई होगी। कार्ल को घुड़सवारी से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देने में बहुत आनन्द आता था। इस विषय पर उसे कोई नहीं हरा सकता था। कौन सा घोड़ा कौन सी रेस जीतेगा, कौन सा जॉकी अच्छा है और कौन सा नहीं – कार्ल को सब पता था। यदि हम घोड़ों और उनके सवारों के चित्र कार्ल को दिखाते और फिर उनके लिखे नामों पर हाथ रख कर छिपा देते तब भी वह उनके सही नाम बता देता था क्योंकि उसने कई बार इन घोड़ों को अपनी कल्पना में देखा था।

जब कार्ल दस वर्ष का हुआ तो उसने पहली बार जिमखाना रेस में भाग लिया। अपने 'फ्यूरी' घोड़े की सवारी करते हुए उसे इस रेस में सफलता

मिली परन्तु यह सफलता उसे पूरी तरह सन्तुष्ट न कर पाई। वह और बहुत कुछ चाहता था। अगले दिन फिर जिमखाना रेस के समय वह घोड़ों की रिंग के पास बैठा हुआ आशाभरी नज़रों से घोड़ों के मालिकों को आता-जाता देख रहा था। मेरे द्वारा यह पूछने पर की वह वहां क्या कर रहा है तो उसने बताया कि वह इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि कहीं किसी घोड़े का मालिक अपने घोड़े पर उसे बैठने दे तथा रेस में भाग लेने का अवसर दे।

मैंने उसे डांटा और कहा, "आओ अब चलो भी, बस बहुत हो गया। तुम्हारे पिताजी तुम्हें ऐसा करने की आज्ञा कदापि नहीं देंगे।" ऐसा कहकर मैं उसे लगभग घसीटते हुए दर्शक स्टैन्ड की तरफ ले आई।

अगले रविवार कार्ल हमें बिना बताए फिर उसी जगह पर छिप कर बैठ गया। इस बार भाग्य ने उसका साथ दिया। वह किसी अजीब से दिखने वाले व्यक्ति को लेकर मेरे पास आया। कार्ल के चेहरे पर ख़ुशी दमक रही थी। "मम्मी! इस आदमी के पास कोई जॉकी नहीं है और यह चाहता है कि मैं इसके घोड़े पर सवार होकर रेस में भाग लूं। मम्मी प्लीज़! मुझे केवल एक बार ऐसा करने की अनुमति दो" उसने बहुत अधिक अनुनय की। मेरा हृदय इतना कठोर नहीं हो पाया कि मैं उसे मना करूं परन्तु हां करना भी कौन सा आसान था? इसके दो कारण थे। एक था कार्ल के पिता का गुस्सा और दूसरा था कार्ल का कम वज़न। कार्ल का वज़न तीस किलोग्राम मात्र था जबकि इस में भाग लेने के लिये पैंतालीस किलोग्राम का होना आवश्यक था। एक मित्र की सहायता से घोड़े पर अधिक वज़नी काठी लगवाई गई और एक भारी बैग बंधवा दिया। अन्ततः हम तैयार हो गये परन्तु अभी बुरा झटका लगना बाकी था। मैंने जैसे ही उस घोड़े पर नज़र डाली, मेरे तो होश ही उड़ गये। मैं इतनी दुखी हुई कि मेरा मन किया कि यहां से भाग जाऊं। यह घोड़ा बहुत कमज़ोर तथा मरियल तो था ही, सड़े-गले जख्मों और फोड़ों से भी भरा हुआ था। दौड़ना तो दूर की बात थी उससे ठीक से चला भी नहीं जा रहा था। कार्ल को इन सब की कोई परवाह नहीं थी। कार्ल के पिता उस समय रेसकोर्स कार्यालय में अधिकारी थे। उन्होंने जैसे ही यह सब देखा तो गुस्से से बिफर पड़े, "यह सब क्या हो रहा है?" परन्तु अब कुछ नहीं हो सकता था। कुछ भी बदलना अब सम्भव नहीं था। प्रसन्नता से भरपूर कार्ल उस घोड़े पर बैठकर घुडदौड़ स्थल की ओर चल दिया।

रेस शुरू होने की घंटी बजी। मैं चिन्तित हो उठी। मेरी नज़रें कार्ल को खोज रही थी। कार्ल मैदान में कहीं नज़र नहीं आ रहा था। अन्य घोड़े विजयस्थल पर पहुंचने वाले थे परन्तु कार्ल और उसके घोड़े का कोई अता-पता नहीं था। मैंने दूरबीन लगाकर नज़र गड़ाई तो मुझे मैदान के एक छोर पर एक छोटी सी आकृति घोड़ा हांकते हुए नज़र आई। आखिरकार कार्ल विजयस्थल के पास पहुंचा और वो भी तब जब सारे घोड़े रेस समाप्त करके अपने-अपने अस्तबल में लौट चुके थे। इस सबके बावजूद कार्ल न रूका और न ही हताश हुआ। वह घोड़े पर जमा ही रहा तथा थोड़ी देर बाद शुरू होने वाली दूसरी रेस में भाग लेने के लिये तैयार दिखा। मैं उसकी तरफ दौड़ पड़ी क्योंकि मैं जानती थी कि अगर उसने दोबारा इस रेस में भाग लिया तो उसका हाल फिर से वैसा ही होगा।

इतना सब होने के बाद भी वह बहुत ख़ुश था। उसपर इन सब बातों का कोई असर नहीं दिखाई दे रहा था कि उसका घोड़ा बदसूरत, बीमार तथा हड्डियों का ढ़ांचा मात्र था और चौकड़ी भरना तो दूर वह ठीक से चल भी नहीं सका था और सबसे पिछड़ गया था। कार्ल तो इस बात से प्रसन्न था कि वह जॉकी तो बना और रेस में भाग ले पाया। उसकी अपनी समझ के अनुसार वह दिन उसके लिये सफल था क्योंकि वह अपने सपने का कुछ अंश पूरा कर पाया।

साल बीतने लगे। उसे हर समय अपना सपना पूरा करने की जल्दी लगी रहती। जैसे ही वह पन्द्रह वर्ष का हुआ उसने जॉकी बनने के लाइसेंस के लिये आवेदन करना चाहा। उसने बहुत ज़िद की कि हम उसे इसके लिए अनुमति दें। हमने घर में बहुत विचार-विमर्श के बाद फैसला किया कि हमें कार्ल को इस बात की अनुमति देनी होगी। हम उसे इस बात के लिये मना नहीं कर सकते थे जो उसका जुनून बन गई थी। फिर भी हमने एक शर्त तो लगा ही दी कि आवेदन करने से पहले वह अपनी स्कूली शिक्षा तो पूरी करे। वह बहुत प्रसन्न था और दृढ़ निश्चय के साथ परीक्षा में बैठा कि अब उसका सपना शीघ्र पूरा होगा।

कार्ल अब उस दिन का बेसब्री से इन्तज़ार करने लगा।

अध्याय २

उसका सपना

"मेम साहिबा ..... मेम साहिबा**"** वेटर ने कई बार पुकारा लेकिन मैं ख्यालों में खोई हुई थी। वेटर मेरे लिये कॉफी और ब्रेडरोल लेकर आया था। मैं कार्ल की यादों में इतनी गुम थी कि मैंने अपनी स्टाप वाच भी बंद नहीं की थी। सुबह की रेस पर से मेरा ध्यान हट गया था। मैं उस समय अच्छे मूड में थी। कॉफी पीने के बाद मेरा ध्यान फिर वहीं चला गया जहां से मेरे विचारों की श्रृंखला टूटी थी यानि कि वर्ष १९७६ में।

यह दिसम्बर का महीना था। रायल वैस्टर्न इन्डिया टर्फ क्लब ने कार्ल को यह अनुमति दे दी थी कि वह रेसकोर्स मैदान पर घुड़सवारी कर सकता था, घोड़ों को कसरत करवा सकता था तथा उनके साथ अभ्यास कर सकता था। यह अधिकारियों द्वारा कार्ल को परखने के लिये दिया गया एक अवसर था। इस अवसर को पाकर कार्ल बहुत ख़ुश था। अतः वह इस परीक्षा में खरा उतरा।

प्रत्येक सुबह कार्ल अपने आप जाग जाता। उसे जगने के लिये अलार्म घड़ी की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। सुबह के साढ़े पांच बजे वह साइकिल पर सवार होकर अपने काम पर चला जाता। मुझे अभी भी खाकी कमीज़ पहने, अपने कमरबंद में चाबुक खोंसे उसका सजीला रूप याद आता है। साइकिल के हैन्डल पर वह हैल्मेट लगा लेता था और ख़ुशी से बाय बाय करता तथा पैडल चलाते हुए आँखों से ओझल हो जाता था।

मैं भी उसके पीछे-पीछे अपनी कार द्वारा रेसकोर्स मैदान पर पहुंच जाती। कार्ल बहुत बार सीखने वाले अन्य साथियों के साथ लाईन में खड़ा

दिखाई पड़ता। कार्ल के चेहरे पर उस समय ख़ुशी की लहर दौड़ जाती जब कोई प्रशिक्षक उसे अपने घोड़े पर सवारी करने के लिये चुनता। वह अपने साथियों के संग 'चाय वाले भैय्या' को घेर कर खड़ा हो जाता और जल्दी से प्लेट में गरम-गरम चाय डालकर पीने लगता। सुबह-सुबह कार्ल की "अय! युप" की आवाज़ें सुनाई पड़ती थी। वह इन आवाज़ों के द्वारा अपने रास्ते में रूकावट डालनेवाले सुस्त घोड़ों को हटाता था। वह स्वयं बिजली की गति से घोड़ा दौड़ाता था। कार्ल सबसे अधिक समय तक अभ्यास करता था। उसके अन्य साथी अपने घोड़ों को कसरत कराने के बाद आराम करने के लिये चले जाते थे परन्तु वह सबसे देर बाद लौटता। जहां केवल एक चक्कर लगाने की आवश्यकता होती थी वहां कार्ल अपने घोड़ों के साथ दो चक्कर लगाता। वह मैदान में पहुंचने वाला प्रथम तथा लौटने वाला अन्तिम व्यक्ति होता था।

जनवरी २०, १९७७ के दिन कार्ल को जॉकी के रूप में व्यवसाय अपनाने का लाइसेंस प्राप्त हुआ। 'लायल ड्रीम' नामक घोड़े पर उसने पहली सवारी की। घोड़े का यह नाम उसके सपनों से मेल खाता था क्योंकि उसने ऐसे ही सपने देखे थे। कार्ल को रेस जीतना बहुत आसान लगता था क्योंकि उसे अपनी योग्यता पर पूरा भरोसा था। फिर भी वह अपनी पहली रेस हार गया। उसे इस हार से बहुत दुख पहुँचा। मीडिया ने उसे ऐसे 'जिमखाना राइडर' के नाम से सम्बोधित किया जो बिना मेहनत किये सीधे सफलता की सीढ़ियां चढ़ना चाहता है। लेकिन कार्ल अपने स्वभाव के अनुसार बिना डगमगाए इस असफल प्रयास के बावजूद कठिन परिश्रम करता रहा। इसके बाद कई अवसर ऐसे भी आए जब वह जीत के बहुत करीब पहुंचा। ऐसे अवसरों पर वह अपने दांत भींचता और अगली बार विजय पा लेने की प्रतिज्ञा करता।

मार्च ५, १९७७ का वह भाग्यशाली दिन आ ही गया जब कार्ल ने अपनी पहली रेस जीती। यह जीत उसके रेस में भाग लेना शुरू करने के केवल एक महीना बारह दिन के बाद प्राप्त हुई। अब कार्ल के पैर धरती पर नहीं पड़ रहे थे।

अब रूकना कैसा ? कार्ल दिनों दिन सफलताएं प्राप्त करके मज़बूत होता

चला गया। उसने दो, तीन तथा चार खिलाडियों के बीच होने वाली दौड़ें भी जीती। उसने रेस शुरू करने के तिहत्तरवें दिन पांच दौड़ें जीती जो कि एक दिन में इतनी दौड़ें जीतने का रिकार्ड है। यह यादगार दिन था ६ अप्रैल १९७७। एक नौसिखिए जॉकी द्वारा ऐसी शानदार सफलता प्राप्त करना विश्व में अनूठी बात थी। भीड़ ख़ुशी के मारे पागल हो गई। मीडिया ने भी अब उसकी शान में कसीदे पढ़ने में देर नहीं लगाई। यही मीडिया जो उसे 'जिमखाना राइडर' के नाम से पुकार चुका था अब उसे अपने मुख्य समाचारों में 'विलक्षण युवा कार्ल उमरिगर' कह कर सम्बोधित कर रहा था। मीडिया ने अब उसे कई प्रशंसनीय नाम दिये जैसे कि 'रेसकोर्स की दुनिया में उभरता सितारा', 'प्रतिभा का धनी बालक' तथा 'जादुई बालक' आदि-आदि।

घुड़दौड़ के शौकीन दर्शक दिन प्रति दिन कार्ल के उत्साह और उसकी मुस्कान पर फिदा होने लगे। वह घुड़दौड़ के नामी नायकों को एक-एक करके हराता चला गया। जैसे-जैसे वह जीत पर जीत हासिल करता गया उस पर फूलों की, पुष्पमालाओं की तथा प्रशंसाओं की वर्षा सी होने लगी। इस बेशुमार स्तुति के बावजूद उसमें ज़रा सा भी अभिमान नहीं आया। वह हमेशा विनीत बना रहा। यद्यपि वह काफी पैसा कमाने लगा था फिर भी खर्च के लिये हम उसे सीमित पैसे ही देते थे। इस राशि में से भी वह कुछ जरूरतमंदो को दे देता था। बहुत से लोग उसे घेर कर पूछने लगते, "बाबा, बताओ आज कौन सा घोड़ा जीतेगा?" कार्ल हंस देता तथा उन दो या तीन घोड़ों के नाम बता देता जो उसके अपने घोड़े होते थे।

जिमी और मैं उसके विकास में प्रसन्नतापूर्वक रूचि ले रहे थे। मैंने उसे घुड़सवारी करना सिखाया था जबकि उसके पिता ने अपने अनुभव और ज्ञानद्वारा घुड़दौड़ की पेचीदगियां सिखाई। यह ज्ञान उसके लिये एक प्रकाश स्तम्भ सिद्ध हुआ।

मुझे ख़ुशी एवं उत्तेजना से भरे वे दिन याद हैं जब हमारे घर में बहस छिड़ा करती थी कि कल होने वाली रेस में किस घोड़े के जीतने के आसार हैं। जिमी अपने अनुभव तथा ज्ञान के आधार पर जिस घोड़े का नाम लेता था कार्ल प्रायः उससे असहमत होता था। कार्ल किसी ऐसे घोड़े का नाम लेता था जो कि अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहा होता था। हम कार्ल की बातों

को सुनते तो थे परन्तु सनक में आकर अपनी ही पसन्द के घोड़ों पर दांव लगा देते थे। बहुत बार हमें पछतावा ही होता था क्योंकि हम उन घोड़ों पर लगाया हुआ पैसा हार जाते थे। कार्ल रेस के मैदान से ही हमें इशारों में जताता, **"**मैंने कहा था न कि यह घोड़ा जीतेगा।**"** उसे इस बात का कोई अफसोस नहीं होता था कि हम हार गये थे और हमें नुकसान हुआ था। हमें कार्ल के इन स्पष्ट तथा निश्चय भरे विचारों पर गर्व था। वे दिन सच में हंसी और ख़ुशी से लबालब भरे हुए दिन थे।

१४ अगस्त १९७७ से उसे रेसिंग भत्ता मिलना बंद हो गया। यह नियम है कि जब कोई नौसिखिया जॉकी चालीस दौड़ें जीत लेता है तो उसे यह भत्ता मिलना बंद हो जाता है क्योंकि अब वह कुशल जॉकी माना जाता है। कार्ल ने यह सब जितने कम समय में किया उतने कम समय में कोई और व्यक्ति अभी तक भी नहीं कर पाया है।

यह कार्ल का सौभाग्य था कि कैरियर की शुरूआत में उसे **'**रायल टर्न**'** नामक जादुई घोड़ा मिल गया। पहली बार जब उसने रायल टर्न की सवारी की तब घर आते ही उत्तेजित होकर बोला

"मैंने कहा था न!**"**

"मम्मी, मेरे अस्तबल में चैम्पियन आ गया है।**"** वह घोड़ों को कसरत कराने तथा सिखा कर पूरी तरह योग्य बनाने के लिये जी तोड़ मेहनत करने लगा। ऑस्ट्रेलिया के मशहूर चैम्पियन ट्रेनर टामी स्मिथ ने कार्ल को अपने पास ट्रेनिंग लेने के लिये बुलावा भेजा। इस ट्रेनर के पास बीस वर्ष का गहन अनुभव था। कार्ल ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। कार्ल सच्चा और उत्साह से भरपूर एक ऐसा व्यक्तित्व था जिसे अपने पिता के मार्गदर्शन और उनके ज्ञान की प्रवीणता पर पूरा भरोसा था। हमने कार्ल के इस निर्णय का समर्थन किया।

रायल टर्न कार्ल की आशाओं पर खरा उतरा। कुछ शुरूआती दौड़ें जीतने के बाद कार्ल और रायल टर्न की जोड़ी साउथ इन्डिया के घुड़दौड़ सत्र की **'**बैंगलौर डर्बी रेस**'** में भाग लेने के लिए तैयार हो गई। रायल टर्न के मालिक गोकुलदास परिवार को उनके कुछ शुभचिन्तकों ने सलाह दी कि वे अपने जादुई घोड़े की बागडोर एक नौसिखिए और कम उम्र के युवक को न सौंपें। गोकुलदास परिवार पिछले बयासी वर्षों से घुड़दौड़ व्यवसाय से जुड़ा हुआ था और इतने लम्बे समय में उन्हें केवल एक शानदार सफलता हासिल हुई थी। कार्ल सांस रोके उनके निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा था। गोकुलदास परिवार ने कार्ल को निराश नहीं किया। कम उम्र का होने के बावजूद उन्होंने कार्ल पर पूरा भरोसा किया और अपने इस बेहतरीन घोड़े को कार्ल के हाथों सौंप दिया। उन्हें विश्वास था कि कार्ल इस कसौटी पर खरा उतरेगा।

१६ जुलाई १९७८ इस प्रसिद्ध रेस की पूर्व संध्या थी। उस दिन वर्षा भी हो गई। हम सभी परिवार जन कार्ल का उत्साह बढ़ाने के लिये मुम्बई से बैंगलोर आये हुए थे। उस रात बारिश की रिमझिम हो रही थी और बीच-बीच में बिजली भी कड़क रही थी। हम सभी एक कमरे में सिमटे हुए बैठे थे। हम चिन्तित थे, हमारे दिल डर से बैठे जा रहे थे। हमारे मन में प्रश्न उठ रहे थे, **"**क्या रायल टर्न भीगे हुए मैदान पर वैसी चौकड़ी भर पायेगा जैसे कि वह सूखी ज़मीन पर भरता है? क्या रायल टर्न उन चारों घोड़ों को हराने में कामयाब हो पायेगा जो उससे टक्कर ले रहे थे? ये चारों घोड़े एक ही मालिक के थे जो कि इस जीत के ताज को

ललचाई नज़रों से देख रहा था। हम यह सब बहुत धीरे से बोल रहे थे ताकि पास में सोये कार्ल की नींद न उचट जाए। कार्ल इन सब चिन्ताओं से बेखबर दोनो हाथ सिर के पीछे रखे शाही अन्दाज़ में पीठ के बल सोया हुआ था। लगता था कि उसे अपने एवं अपने घोड़े पर पूरा विश्वास था।

कार्ल और रायल टर्न ने त्रुटिहीन प्रदर्शन किया। इस जोड़ी ने दूसरे घोड़ों की चतुराई, मैदान में कहीं-कहीं फैले कीचड़ और बारिश आदि सभी बाधाओं को कुशलता से पार किया। कार्ल अपने प्रतिद्वन्द्वी से **'दो दूरियों'** के स्पष्ट अन्तर से जीता। जैसे ही कार्ल विजय स्थल पर पहुंचा उसकी मोहक मुस्कान देखने लायक थी। दर्शक झूम उठे। वह पूरे विश्व में साढ़े सतरह साल की कम उम्र में डर्बी रेस जीतनेवाला पहला जॉकी बन गया था।

इस बालक के असाधारण शौर्य प्रदर्शन की खुशी में दी गई पार्टी में सभी ने शैम्पेन और टोस्ट का आनन्द लिया। ऐसा लग रहा था कि कार्ल को किसी दैवी शक्ति ने छू लिया था। उसका सपना साकार हो गया था। इस पार्टी में उसने अपने गिलास में से केवल एक घूंट भरा और फिर वह गिलास मुझे देकर कहा, **"**मम्मी, अब इसे आप पी लो।**"** उसके घर लौटने का समय हो गया था। उसे अगली सुबह जल्दी उठकर अपने घोड़ों को कसरत कराने के लिये लेकर आना था। ऐसा करना उसे बहुत अच्छा लगता था।

१९७८ का वर्ष कार्ल के लिये सफलताओं की सौगात लेकर आया। उसने बहुत नामी रेसें जीतीं जिनमें इन्डियन २००० गिनीज़ रेस, इन्डियन ओक्स रेस जैसी दौड़ें भी थी। अब केवल एक ही बड़ी रेस यानि कि **'**इंडियन डर्बी**'** जीती जानी बाकी थी। इस गौरवशाली रेस को जीतना हरेक जॉकी का सपना होता है।

४ फरवरी १९७९ का वह भाग्यशाली दिन भी आ गया जब कार्ल तथा उसके अभिन्न साथी रायल टर्न ने यह बाज़ी भी मार ली। उस दिन महालक्ष्मी रेसकोर्स में बड़ी संख्या में उपस्थित दर्शकों ने हर्षध्वनि से आकाश गुंजा दिया। इन्डियन डर्बी के इतिहास के गौरवशाली पन्नों में सैंतीसवीं जीत का सेहरा कार्ल उमरिगर और रायल टर्न की जोड़ी के सिर बंधा।

रायल टर्न पर सवार कार्ल

क्या कार्ल वहीं रूक पाया? नहीं। वह और अधिक रेसें जीतना चाहता था। वह अन्य घोड़ों के साथ दूसरी रेसों में भी भाग लेना चाहता था। उस सत्र की समाप्ति का समय करीब आ रहा था। कार्ल एक सत्र में ५४ रेस जीतने के पुराने रिकार्ड को तोड़ चुका था। इस सत्र में अब केवल एक ही दिन बचा था। कार्ल चैम्पियनशिप ट्राफी जीतने के काफी करीब था। उसे अब केवल इतना करना था कि अपने मुख्य प्रतिद्वन्द्वी को केवल चार दौड़ों से पीछे बनाए रखना था। उसके लिये यह करना बहुत आसान था। हमें कार्ल पर बहुत गर्व था।

"आओ मम्मी, अब घर चलें। काम पूरा हो गया है।" उसकी इस आवाज़ ने मेरी तन्द्रा को भंग कर दिया। मैं बहुत देर से इस सुहाने दिवास्वप्न में मशगूल थी। रेस का हरा-भरा मैदान और उसपर सफेद रंग की सुन्दर रेलिंग सामने आ गई। मेरी निगाहें कार्ल के पसीने से भरे चेहरे पर टिक गई।